संस्कृति (भदंत आनंद कौसल्यायन)

लेखक-परिचय

जीवन-परिचय–भदंत आनंद कौसल्यायन एक संवेदनशील विचारक हैं। अनन्य हिंदी सेवक कौसल्यायन जी बौद्ध भिक्षु थे। वे यायावर प्रकृति के रहे और देश-विदेश की अनेक यात्राएँ कीं। भदंत आनंद कौसल्यायन का जन्म सन् 1905 में पंजाब के अंबाला जिले के सोहाना ग्राम में हुआ था। कौसल्यायन जी महात्मा गांधी के साथ बहुत समय तक वर्धा में रहे। सन् 1988 में उनका निधन हो गया।

रचनाएँ–कौसल्यायन जी ने अधिकतर यात्रा-वृत्तांतों की रचना की है। उनकी बीस से अधिक पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं, जिनमें प्रमुख हैं–भिक्षु के पत्र, जो भूल ना सका, आह! ऐसी दरिद्रता, बहानेबाजी, यदि बाबा ना होते, रेल का टिकट, कहाँ क्या देखा।

कौसल्यायन जी ने बौद्ध धर्म के दर्शन से संबंधित अनेक मौलिक और अनूदित ग्रंथों की भी रचना की है। इनमें जातक कथाओं का अनुवाद विशेष उल्लेखनीय है।

साहित्यिक विशेषताएँ–कौसल्यायन जी को भ्रमण में बहुत रुचि थी। देश-विदेश के भ्रमण ने उन्हें अनुभव की व्यापकता प्रदान की और उनकी सृजनशीलता को समृद्ध किया। उन्होंने 'हिंदी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग' और 'राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा' के माध्यम से देश-विदेश में हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार का महत्त्वपूर्ण कार्य किया। कौसल्यायन जी, महात्मा गांधी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व से अत्यंत प्रभावित थे। वे कल्पना की उड़ान भरने वाले पंछी नहीं थे, बल्कि वास्तविकता का परिचय कराने वाले थे।

भाषा-शैली–कौसल्यायन जी की भाषा सहज, सरल तथा आम जनता की बोलचाल की भाषा है। उसमें तत्सम, तद्भव तथा लोकभाषा के शब्दों के अतिरिक्त अंग्रेज़ी के प्रचलित शब्दों का भी प्रयोग देखने को मिलता है। कौसल्यायन जी की शैली सरस, रोचक, प्रवाहपूर्ण तथा प्रसाद गुणयुक्त है। सहज बोलचाल की भाषा में लिखे उनके निबंध, संस्मरण और यात्रा-वृत्तांत बहुत चर्चित रहे हैं।

पाठ का परिचय

संस्कृति और सभ्यता को समझना अत्यंत दुष्कर कार्य है, किंतु बौद्ध धर्म के अनुयायी भदंत आनंद कौसल्यायन ने अपने 'संस्कृति' नामक इस निबंध में सभ्यता और संस्कृति को परिभाषित करने के साथ-साथ इनके पारस्परिक संबंधों की विवेचना भी की है। उन्होंने सभ्यता और संस्कृति से संबंधित अनेक प्रश्न उठाकर उदाहरणसहित उनका समाधान करते हुए यह स्पष्ट किया है कि सभ्यता और संस्कृति वस्तुतः एक ही वस्तु हैं। उनके अनुसार सभ्यता संस्कृति का ही सुफल है, इसलिए मानव संस्कृति सभ्यता का अविभाज्य अंग है। उन्हें ऐसे लोगों की बौद्धिकता पर आश्चर्य भी होता है और दुःख भी, जो संस्कृति का बँटवारा करने के पक्षपाती हैं। संस्कृति के विभाजन की यह भावना समाज का विघटन करके उसको अपूरणीय क्षति पहुँचाती है। इसीलिए भदंत मनुष्य अथवा समाज के लिए कल्याणकारी किसी भी बात को न सभ्यता मानते हैं और न ही संस्कृति। वास्तव में मानवमात्र का कल्याण-करनेवाली बातें ही सभ्यता और संस्कृति हैं।

पाठ के प्रमुख पात्र और उनका परिचय

विशेष–इस पाठ में कोई पात्र नहीं है बल्कि यह संस्कृति और सभ्यता को व्याख्यायित करने वाला आलेख है।

पाठ का सारांश

सभ्यता-संस्कृति : एक परिचय–'संस्कृति' एक विचारपूर्ण निबंध है। यह सभ्यता और संस्कृति से जुड़े अनेक जटिल प्रश्नों के उत्तर देता है। 'सभ्यता' और 'संस्कृति' ऐसे शब्द हैं, जिनका सर्वाधिक उपयोग होता है और ये शब्द सबसे कम समझ में आते हैं। जब इन दोनों शब्दों के साथ कुछ विशेषण लग जाते हैं, तब तो इनका अर्थ कुछ समझ आता है, मगर वह भी ठीक-ठीक नहीं। निबंधकार कहता है–

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

कल्पना कीजिए उस समय की जब मानव समाज 'आग' से परिचित नहीं था। आज तो घर-घर चूल्हा जलता है। जिस आदमी ने पहले-पहल आग का आविष्कार किया होगा, वह कितना बड़ा आविष्कर्त्ता होगा! अथवा कल्पना कीजिए उस समय की, जब मानव को सुई-धागे का परिचय न था, जिस व्यक्ति के दिमाग में सर्वप्रथम यह बात आई होगी कि लोहे के एक टुकड़े को घिसकर उसके एक सिरे को छेदकर और छेद में धागा पिरोकर कपड़े के दो टुकड़े एक साथ जोड़े जा सकते हैं, वह भी कितना बड़ा आविष्कर्त्ता रहा होगा!

पहले उदाहरण में एक चीज़ है किसी व्यक्ति विशेष की आग का आविष्कार कर सकने की शक्ति और दूसरी चीज़ है आग का आविष्कार। इसी प्रकार दूसरे सुई-धागे के उदाहरण में एक चीज़ है सुई-धागे का आविष्कार कर सकने की शक्ति और दूसरी चीज़ है सुई-धागे का आविष्कार।

जिस योग्यता, प्रवृत्ति अथवा प्रेरणा के बल पर आग व सुई-धागे का आविष्कार हुआ, वह है व्यक्ति विशेष की संस्कृति और उस संस्कृति द्वारा जो आविष्कार हुआ, जो चीज़ उसने अपने तथा दूसरों के लिए आविष्कृत की, उसका नाम है सभ्यता।

इस प्रकार निबंधकार ने आग और सुई-धागे के उदाहरण देकर संस्कृति और सभ्यता को अत्यंत सरल रूप में समझाया है।

संस्कृत और सभ्य में अंतर–एक संस्कृत व्यक्ति किसी नई वस्तु की खोज करता है, किंतु उसकी संतान को वह अपने पूर्वज से अनायास ही प्राप्त हो जाती है। जिस व्यक्ति की बुद्धि ने किसी नए तथ्य का दर्शन किया, वही व्यक्ति वास्तविक संस्कृत व्यक्ति है। उसकी संतान सभ्य भले ही बन जाए, संस्कृत नहीं हो सकती।

सभ्यता : संस्कृत व्यक्तियों की देन–आग के आविष्कार में संभवतया भूख शांत करने की प्रेरणा रही हो, सुई-धागे के आविष्कार में शायद तन ढकने की प्रेरणा रही हो। अब कल्पना कीजिए उस आदमी की, जिसका पेट भरा है, जिसका तन ढँका है, लेकिन जब वह खुले आकाश के नीचे लेटा हुआ रात के जगमगाते तारों को देखता है तो उसे केवल इसलिए नींद नहीं आती: क्योंकि वह यह जानने के लिए परेशान है कि आखिर यह मोती भरा थाल क्या है? पेट भरने और तन ढँकने की इच्छा मनुष्य की संस्कृति की जननी नहीं है। पेट भरा और तन ढँका होने पर भी ऐसा मानव, जो वास्तव में संस्कृत है, खाली नहीं बैठ सकता। हमारी सभ्यता का एक बड़ा अंश हमें ऐसे संस्कृत आदमियों से ही प्राप्त हुआ है, जिनकी चेतना पर स्थूल भौतिक कारणों का प्रभाव अधिक था, किंतु उसका कुछ हिस्सा हमें विद्वानों से भी मिला है, जिन्होंने तथ्य-विशेष को किसी भौतिक प्रेरणा के वशीभूत होकर नहीं, बल्कि उनके अपने अंदर की सहज संस्कृति के ही कारण प्राप्त किया है। रात के तारों को देखकर न सो सकने वाला विद्वान् या विचारक हमारे वर्तमान ज्ञान का ऐसा ही प्रथम पुरस्कर्ता था।

मानव-संस्कृति के माता-पिता : भौतिक प्रेरणा एवं ज्ञानेप्सा–निबंधकार आगे पुनः प्रश्न करता है–भौतिक प्रेरणा, ज्ञानेप्सा–क्या ये दो ही मानव संस्कृति के माता-पिता हैं? दूसरे के मुँह में कौर डालने के लिए जो अपने मुँह का कौर छोड़ देता है, उसको यह बात क्यों और कैसे सूझती है? रोगी बच्चे को सारी रात गोद में लिए जो माता बैठी रहती है, वह आखिर ऐसा क्यों करती है? सुनते हैं कि रूस का भाग्यविधाता लेनिन अपनी डैस्क में रखे हुए डबल रोटी के सूखे टुकड़े स्वयं न खाकर दूसरों को खिला दिया करता था। वह आखिर ऐसा क्यों करता था? संसार के मज़दूरों को सुखी करने का स्वप्न देखते हुए कार्ल मार्क्स ने अपना सारा जीवन दुःख में बिता दिया। और, इन सबसे बढ़कर आज नहीं, आज से ढाई हज़ार वर्ष पूर्व सिद्धार्थ ने अपना घर केवल इसलिए त्याग दिया कि किसी तरह तृष्णा के वशीभूत आपस में लड़ती मानवता सुखपूर्वक रह सके।

संस्कृति के विविध आयाम–मानव संस्कृति की जो योग्यता आग व सुई-धागे का आविष्कार कराती है, वह भी संस्कृति है, जो योग्यता तारों की जानकारी कराती है, वह भी संस्कृति है और जो योग्यता सिद्धार्थ से परित्याग कराती है वह भी संस्कृति है।

संस्कृति एक अविभाज्य वस्तु–'सभ्यता' संस्कृति का परिणाम होती है। हमारे खाने-पीने, ओढ़ने-पहनने, यातायात के साधन, आपस में लड़ने-झगड़ने के तरीके–ये सभी सभ्यता हैं। निबंधकार यहाँ प्रश्न करता है कि मानव की जो योग्यता उससे आत्मविनाश के साधनों का आविष्कार कराती है, हम उसे संस्कृति कहें या असंस्कृति? अनेक बार संस्कृति और सभ्यता के खतरे में होने की बात सुनते हैं। संस्कृति-सभ्यता की तमाम अवमानना की जाती है, मगर दोनों ही अवमानना या विभाजन की चीज़ नहीं हैं। मानव संस्कृति एक अविभाज्य वस्तु है और उसमें कल्याण की भावना निहित है।

शब्दार्थ

आध्यात्मिक = आत्मा, परमात्मा संबंधित। **साक्षात्** = आँखों के सामने। **आविष्कर्त्ता** = आविष्कार करने वाला। **परिष्कृत** = शुद्ध किया हुआ। **अनायास** = बिना प्रयास के। **शीतोष्ण** = ठंडा और गरम। **निठल्ला** = अकर्मण्य, बेकार। **मनीषियों** = विद्वानों। **वशीभूत** = वश में होना। तृष्णा = प्यास, लोभ। **अवश्यंभावी** = जिसका होना निश्चित हो। **अविभाज्य** = जिसे बाँटा न जा सके।

भाग-1

बहुविकल्पीय प्रश्न

गद्यांशों पर आधारित प्रश्न

निर्देश–निम्नलिखित गद्यांशों को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के सही उत्तर विकल्प चुनकर लिखिए–

(1) एक संस्कृत व्यक्ति किसी नई चीज़ की खोज करता है; किंतु उसकी संतान को वह अपने पूर्वज से अनायास ही प्राप्त हो जाती है। जिस व्यक्ति की बुद्धि ने अथवा उसके विवेक ने किसी भी नए तथ्य का दर्शन किया, वह व्यक्ति ही वास्तविक संस्कृत व्यक्ति है और उसकी संतान जिसे अपने पूर्वज से वह वस्तु अनायास ही प्राप्त हो गई है, वह अपने पूर्वज की भाँति सभ्य भले ही बन जाए, संस्कृत नहीं कहला सकता। एक आधुनिक उदाहरण लें। न्यूटन ने गुरुत्वाकर्षण के सिद्धांत का आविष्कार किया। वह संस्कृत मानव था। आज के युग का भौतिक विज्ञान का विद्यार्थी न्यूटन के गुरुत्वाकर्षण से तो परिचित है ही; लेकिन उसके साथ उसे और भी अनेक बातों का ज्ञान प्राप्त है जिनसे शायद न्यूटन अपरिचित ही रहा। ऐसा होने पर भी हम आज के भौतिक विज्ञान के विद्यार्थी को न्यूटन की अपेक्षा अधिक सभ्य भले ही कह सकें; पर न्यूटन जितना संस्कृत नहीं कह सकते।

1. एक संस्कृत व्यक्ति क्या करता है–
(क) ग्रंथों की रचना करता है
(ख) नई कहानियाँ लिखता है
(ग) नए वस्त्र धारण करता है
(घ) नई चीज़ की खोज करता है।

2. संस्कृत व्यक्ति की संतान को क्या अनायास मिल जाता है–
(क) धन-वैभव (ख) ज्ञान
(ग) आविष्कृत नई चीज़ (घ) संस्कृति और सभ्यता।

3. संस्कृत व्यक्ति की संतान बन सकती है–
(क) सभ्य (ख) संस्कृत
(ग) धनवान (घ) बलवान।

4. गुरुत्वाकर्षण के सिद्धांत की खोज किसने की–
(क) एडिसन ने (ख) न्यूटन ने
(ग) जेम्सवॉट ने (घ) फैराडे ने।

5. न्यूटन कैसा मानव था–
(क) संस्कृत (ख) सभ्य
(ग) ज्ञानी (घ) अशिक्षित।

उत्तर— **1.** (घ) **2.** (ग) **3.** (क) **4.** (ख) **5.** (क)।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

(2) आग के आविष्कार में कदाचित पेट की ज्वाला की प्रेरणा एक कारण रही। सुई-धागे के आविष्कार में शायद शीतोष्ण से बचने तथा शरीर को सजाने की प्रवृत्ति का विशेष हाथ रहा। अब कल्पना कीजिए उस आदमी की जिसका पेट भरा है, जिसका तन ढँका है, लेकिन जब वह खुले आकाश के नीचे सोया हुआ रात के जगमगाते तारों को देखता है, तो उसको केवल इसलिए नींद नहीं आती क्योंकि वह यह जानने के लिए परेशान है कि आखिर यह मोती भरा थाल क्या है? पेट भरने और तन ढँकने की इच्छा मनुष्य की संस्कृति की जननी नहीं है। पेट भरा और तन ढँका होने पर भी ऐसा मानव जो वास्तव में संस्कृत है, निठल्ला नहीं बैठ सकता। हमारी सभ्यता का एक बड़ा अंश हमें ऐसे संस्कृत आदमियों से ही मिला है, जिनकी चेतना पर स्थूल भौतिक कारणों का प्रभाव प्रधान रहा है, किंतु उसका कुछ हिस्सा हमें मनीषियों से भी मिला है जिन्होंने तथ्य-विशेष को किसी भौतिक प्रेरणा के वशीभूत होकर नहीं, बल्कि उनके अपने अंदर की सहज संस्कृति के ही कारण प्राप्त किया है। रात के तारों को देखकर न सो सकने वाला मनीषी हमारे आज के ज्ञान का ऐसा ही प्रथम पुरस्कर्त्ता था।

1. **आग के आविष्कार का कारण रहा है–**
   (क) पेट की ज्वाला (ख) जिज्ञासा
   (ग) आत्मरक्षा (घ) गरमी से बचाव।
2. **सुई-धागे के आविष्कार का कारण है–**
   (क) सरदी से बचने की प्रवृत्ति
   (ख) गरमी से बचने की प्रवृत्ति
   (ग) शरीर को सजाने की प्रवृत्ति
   (घ) उपर्युक्त सभी।
3. **मोती भरा थाल किसे कहा है–**
   (क) सूर्य युक्त आकाश को (ख) तारों से भरे आकाश को
   (ग) बादलों से घिरे आकाश को (घ) लड़ियों से सजे मंडप को।
4. **कौन निठल्ला नहीं बैठ सकता–**
   (क) संस्कृत व्यक्ति (ख) सभ्य व्यक्ति
   (ग) किसान (घ) मज़दूर।
5. **संस्कृति की जननी है–**
   (क) तन ढँकने की इच्छा (ख) पेट भरने की इच्छा
   (ग) जिज्ञासा और कर्मशीलता (घ) इनमें से कोई नहीं।

उत्तर— **1.** (क) **2.** (घ) **3.** (ख) **4.** (क) **5.** (ग)।

(3) हमारी समझ में मानव संस्कृति की जो योग्यता आग व सुई-धागे का आविष्कार कराती है; वह भी संस्कृति है जो योग्यता तारों की जानकारी कराती है, वह भी है; और जो योग्यता किसी महामानव से सर्वस्व त्याग कराती है, वह भी संस्कृति है।
और सभ्यता? सभ्यता है संस्कृति का परिणाम। हमारे खाने-पीने के तरीके, हमारे ओढ़ने पहनने के तरीके, हमारे गमनागमन के साधन, हमारे परस्पर कट मरने के तरीके; सब हमारी सभ्यता है। मानव की जो योग्यता उससे आत्म-विनाश के साधनों का आविष्कार कराती है, हम उसे उसकी संस्कृति कहें या असंस्कृति? और जिन साधनों के बल पर वह दिन-रात आत्म-विनाश में जुटा हुआ है, उन्हें हम उसकी सभ्यता समझें या असभ्यता? संस्कृति का यदि कल्याण की भावना से नाता टूट जाएगा तो वह असंस्कृति होकर ही रहेगी और ऐसी संस्कृति का अवश्यंभावी परिणाम असभ्यता के अतिरिक्त दूसरा क्या होगा?

1. **संस्कृति क्या है–**
   (क) जो योग्यता आग व सुई-धागे का आविष्कार कराती है
   (ख) जो योग्यता तारों की जानकारी कराती है
   (ग) जो महामानव से सर्वस्व त्याग कराती है
   (घ) उपर्युक्त सभी।
2. **सभ्यता किसका परिणाम है–**
   (क) ज्ञान का (ख) संस्कृति का
   (ग) धर्म का (घ) कर्म का।
3. **हमारी सभ्यता क्या है–**
   (क) हमारे खाने-पीने के तरीके
   (ख) हमारे ओढ़ने-पहनने के तरीके
   (ग) हमारे परस्पर कट-मरने के तरीके
   (घ) उपर्युक्त सभी।
4. **संस्कृति भी कब असंस्कृति हो जाती है–**
   (क) जब उसका कल्याण-भावना से नाता टूट जाता है
   (ख) जब उसका अधर्म से नाता टूट जाता है
   (ग) जब उसका स्वार्थ से नाता टूट जाता है
   (घ) जब उसका अनर्थ से नाता टूट जाता है।
5. **'दिन-रात' में समास है–**
   (क) तत्पुरुष (ख) कर्मधारय
   (ग) द्वंद्व (घ) बहुव्रीहि।

उत्तर— **1.** (घ) **2.** (ख) **3.** (घ) **4.** (क) **5.** (ग)।

पाठ पर आधारित प्रश्न

निर्देश–निम्नलिखित प्रश्नों के सही उत्तर विकल्प चुनकर लिखिए–

1. **'संस्कृति' पाठ के लेखक हैं–**
   (क) यशपाल (ख) स्वयं प्रकाश
   (ग) भदंत आनंद कौसल्यायन (घ) यतींद्र मिश्र।
2. **भदंत आनंद कौसल्यायन का जन्म कब हुआ–**
   (क) सन् 1905 में (ख) सन् 1906 में
   (ग) सन् 1910 में (घ) सन् 1908 में।
3. **वे कौन-से दो शब्द हैं जो कम समझ आते हैं और जिनका उपयोग सबसे अधिक किया जाता है–**
   (क) धर्म-अधर्म (ख) ज्ञान-अज्ञान
   (ग) सभ्यता-संस्कृति (घ) शिक्षा-अशिक्षा।
4. **'सभ्यता' और 'संस्कृति' का अर्थ समझना कब कठिन हो जाता है–**
   (क) जब उनमें अनेक विशेषण लग जाते हैं
   (ख) जब उनमें अनेक प्रत्यय लग जाते हैं
   (ग) जब उनमें कोई विशेषण नहीं लगता
   (घ) जब उनमें कोई प्रत्यय नहीं लगता।
5. **किसी नई चीज़ का आविष्कार करने की शक्ति का योग्यता है–**
   (क) सभ्यता (ख) संस्कृति
   (ग) धर्म (घ) अधर्म।
6. **संस्कृति द्वारा जो आविष्कार होता है, उसका नाम है–**
   (क) सभ्यता (ख) योग्यता
   (ग) संस्कृति (घ) असंस्कृति।
7. **रूस का भाग्य विधाता किसे कहा गया है–**
   (क) लेनिन को (ख) काल मार्क्स को
   (ग) अरस्तू को (घ) अब्राहम लिंकन को।
8. **लेनिन अपनी डैस्क में क्या रखता था–**
   (क) पुस्तकें (ख) फल
   (ग) डबल रोटी के सूखे टुकड़े (घ) चने।
9. **लेनिन डबल रोटी के टुकड़ों का क्या करता था–**
   (क) स्वयं खाता था
   (ख) दूसरों को खिलाता था
   (ग) पक्षियों को खिलाता था
   (घ) फेंक देता था।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

10. **काल मार्क्स ने अपना सारा जीवन दुःख में क्यों बिता दिया–**
(क) मज़दूरों को सुखी करने के लिए
(ख) उसे दुःख में आनंद आता था
(ग) उसके पास सुख-साधन नहीं थे
(घ) उपर्युक्त में से कोई नहीं।

11. **मानवता को सुखी करने के लिए किस महामानव ने गृह-त्याग किया–**
(क) श्रीराम ने (ख) सिद्धार्थ ने
(ग) गांधी जी ने (घ) श्री कृष्ण ने।

12. **'मनीषी' किसे कहा गया है–**
(क) वैज्ञानिक को (ख) चिंतनशील को
(ग) आविष्कारक को (घ) लेखक को।

13. **संस्कृति का संबंध किससे होता है–**
(क) विकास-भावना से (ख) कल्याण-भावना से
(ग) आस्था से (घ) विनाश से।

14. **मानव की योग्यता जो उससे आत्म-विनाश के साधनों का आविष्कार कराती है; वह है–** *(CBSE 2023)*
(क) असभ्यता (ख) अनैतिकता
(ग) असंस्कृति (घ) इनमें से कोई नहीं।

15. **मनुष्य किसके अनुसार विभिन्न आविष्कार करता है–**
(क) सोच के (ख) संस्कृति के
(ग) सिद्धांत के (घ) आवश्यकता के।

16. **मनुष्य ने मौसम से बचने और तन सजाने के लिए किसका आविष्कार किया–**
(क) आभूषण का (ख) वस्त्र का
(ग) सुई-धागे का (घ) इनमें से कोई नहीं।

17. **गौतम बुद्ध ने अपना घर क्यों त्याग दिया था–**
(क) मानवता के सुख के लिए
(ख) बौद्ध धर्म की स्थापना के लिए
(ग) प्रतिष्ठा पाने के लिए
(घ) उपर्युक्त कोई नहीं।

18. **संस्कृति का जनक कौन है–**
(क) पेट भरने वाला (ख) संस्कृत पढ़ने वाला
(ग) तन ढँकने वाला (घ) ज्ञान पैदा करने वाला।

19. **आत्म-विनाश के साधन से आशय है–**
(क) क्रोध (ख) द्वेष
(ग) लोभ (घ) हथियार।

20. **मानव को सुख-सुविधा देने वाले साधन क्या कहलाते हैं–**
(क) संस्कार (ख) सभ्यता
(ग) असभ्यता (घ) प्रतिष्ठा।

उत्तर— **1.** (ग) **2.** (क) **3.** (ग) **4.** (क) **5.** (ख) **6.** (ग) **7.** (क) **8.** (ग) **9.** (ख) **10.** (क) **11.** (ख) **12.** (ख) **13.** (ख) **14.** (ग) **15.** (घ) **16.** (ग) **17.** (क) **18.** (घ) **19.** (घ) **20.** (ख)।

भाग-2

(वर्णनात्मक प्रश्न)

निर्देश–*निम्नलिखित प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर लिखिए–*

प्रश्न 1 : संस्कृत और सभ्य में क्या अंतर है?

उत्तर : संस्कृत व्यक्ति में रचनात्मक बुद्धि, उचित-अनुचित का निर्णय करने की क्षमता (विवेक) और परिश्रम द्वारा लक्ष्य को प्राप्त करने की लगन होती है, जबकि सभ्य व्यक्ति में रचनात्मकता और निर्णय करने की क्षमता का अभाव होता है। परिश्रम को लक्ष्य में परिणत करने का विश्वास प्रायः उनमें नहीं होता। आशय यही है कि संस्कृत व्यक्ति में रचनात्मक प्रवृत्ति प्रबल होती है और सभ्य व्यक्ति में अनुकरणात्मक प्रवृत्ति।

प्रश्न 2 : वास्तविक अर्थों में 'संस्कृत व्यक्ति' किसे कहा जा सकता है? *(CBSE SQP 2023-24)*

उत्तर : जो व्यक्ति अपनी बुद्धि-विवेक और परिश्रम से किसी नए तथ्य का दर्शन करता है अर्थात् किसी नई वस्तु की खोज करता है, उसी व्यक्ति को वास्तविक अर्थों में 'संस्कृत व्यक्ति' कहा जा सकता है।

प्रश्न 3 : लेखक की दृष्टि में 'सभ्यता' और 'संस्कृति' की सही समझ अब तक क्यों नहीं बन पाई है?

उत्तर : लेखक के अनुसार 'सभ्यता' और 'संस्कृति' शब्दों का प्रयोग तो बहुत होता है, किंतु ये लोगों की समझ में कम आते हैं। मिलता-जुलता अर्थ होने के कारण लोग दोनों को एक ही समझ लेते हैं। इन शब्दों के सभी ने अपने-अपने अर्थ गढ़ रखे हैं, किंतु उनके वे अर्थ भी तब गड़बड़ा जाते हैं, जब इन दोनों शब्दों के साथ विभिन्न प्रकार के विशेषण लगाकर भौतिक-सभ्यता और आध्यात्मिक-सभ्यता आदि नए शब्द बना लिए जाते हैं। इसलिए इनकी सही समझ अब तक नहीं बन पाई है।

प्रश्न 4 : भदंत आनंद कौसल्यायन के अनुसार 'संस्कृति' से क्या अभिप्राय है? *(CBSE 2023)*

उत्तर : भदंत आनंद कौसल्यायन के अनुसार मनुष्य की जो योग्यता या शक्ति मानव कल्याण के हित नए अविष्कार, ज्ञानार्जन और त्याग कराती है, वह संस्कृति कहलाती है।

प्रश्न 5 : न्यूटन को संस्कृत मानव कहने के पीछे कौन-से तर्क दिए गए हैं? न्यूटन द्वारा प्रतिपादित सिद्धांतों एवं ज्ञान की कई दूसरी बारीकियों को जानने वाले लोग भी न्यूटन की तरह संस्कृत नहीं कहला सकते, क्यों? *(CBSE 2017)*

उत्तर : वह व्यक्ति ही वास्तविक संस्कृत व्यक्ति है, जिसकी बुद्धि अथवा विवेक ने किसी भी नए तथ्य का दर्शन अथवा आविष्कार किया हो। न्यूटन ने गुरुत्वाकर्षण के सिद्धांत का आविष्कार किया था; अतः न्यूटन एक संस्कृत मानव थे। जिस व्यक्ति को कोई तथ्य, दर्शन अथवा ज्ञान अनायास विरासत अथवा ज्ञान-परंपरा में मिलता है, वह व्यक्ति संस्कृत नहीं, बल्कि सभ्य कहलाता है। आज भौतिक विज्ञान के जो विद्यार्थी न्यूटन द्वारा प्रतिपादित सिद्धांत के साथ-साथ इस सिद्धांत की उन बारीकियों से भी परिचित हों, जिनका ज्ञान न्यूटन को न रहा हो, उन विद्यार्थियों को न्यूटन से अधिक सभ्य तो कहा जा सकता है, उनकी भाँति संस्कृत नहीं।

प्रश्न 6 : किन महत्त्वपूर्ण आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए सुई-धागे का आविष्कार हुआ होगा?

उत्तर : सरदी-गरमी के प्रभाव और कीट-पतंगों के प्रकोप से शरीर की रक्षा करने की आवश्यकता एवं शरीर को सजाने की प्रवृत्ति की पूर्ति के लिए सुई-धागे का आविष्कार हुआ होगा।

प्रश्न 7 : "मानव संस्कृति एक अविभाज्य वस्तु है।" किन्हीं दो प्रसंगों का उल्लेख कीजिए जब–

(क) मानव संस्कृति को विभाजित करने की चेष्टाएँ की गईं।

(ख) मानव संस्कृति ने अपने एक होने का प्रमाण दिया। *(CBSE 2016)*

उत्तर : (क) मानव संस्कृति को हिंदू संस्कृति, मुस्लिम संस्कृति, सिख संस्कृति, ईसाई संस्कृति आदि रूपों में वर्गीकृत करके उसे विभाजित करने की चेष्टाएँ की गईं।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

(ख) रूस का भाग्यविधाता लेनिन अपनी डैस्क में रखे हुए डबल रोटी के सूखे टुकड़े स्वयं न खाकर दूसरों को खिला दिया करता था, संसार के मज़दूरों को सुखी देखने का स्वप्न देखने वाले कार्ल मार्क्स ने अपना सारा जीवन दुःख में बिता दिया। इसी प्रकार सिद्धार्थ ने अपना घर केवल इसलिए त्याग दिया कि वे मानव संस्कृति को एक देखना चाहते थे। इन सभी उदाहरणों से स्पष्ट है कि मानव संस्कृति ने अपने एक होने का प्रमाण दिया है, क्योंकि सभी देश-काल में मानव संस्कृति का एकमात्र उद्देश्य जनकल्याण रहा है।

प्रश्न 8 : आशय स्पष्ट कीजिए–
मानव की जो योग्यता उससे आत्म-विनाश के साधनों का आविष्कार कराती है, हम उसे उसकी संस्कृति कहें या असंस्कृति?

उत्तर : मानव की जो योग्यता उससे आत्म-विनाश के साधनों का आविष्कार कराती है हम उसे असंस्कृति ही कहेंगे, क्योंकि यह मानव का कल्याण की भावना से नाता तोड़ती है और संस्कृति मानव-कल्याण का पोषण करती है।

प्रश्न 9 : लेखक ने अपने दृष्टिकोण से सभ्यता और संस्कृति की एक परिभाषा दी है। आप सभ्यता और संस्कृति के बारे में क्या सोचते हैं, लिखिए।

उत्तर : संस्कृति कार्यों का कारण रूप है और सभ्यता उनका व्यावहारिक रूप। उदाहरण के लिए वस्त्रों का आविष्कार इसलिए किया गया; क्योंकि मनुष्य को अपना तन ढकने के लिए किसी आवरण की आवश्यकता थी। इस आवश्यकता की पूर्ति हेतु जो वस्त्र का आविष्कार किया गया है, यही संस्कृति है। अब वस्त्रों का आवरण के रूप में विविध रीतियों से प्रयोग करने के जो विभिन्न ढंग हमने अपनाए, वही सभ्यता कहलाते हैं। कुर्ता-पाजामा, धोती-कुर्ता साड़ी-ब्लाउज, कोट-पैंट आदि के द्वारा शरीर ढकने की विभिन्न रीतियाँ ही तो वस्त्र के संदर्भ में 'सभ्यता' संज्ञा से अभिहित की जाती हैं। इस प्रकार से हम कह सकते हैं कि सभ्यता संस्कृति से अधिक व्यापक वस्तु है।

प्रश्न 10 : लेखक भदंत आनंद कौसल्यायन के अनुसार सभ्यता और संस्कृति में क्या अंतर है?

उत्तर : किसी नए तथ्य की खोज में लगने वाली प्रेरणा, प्रवृत्ति और योग्यता संस्कृति है तथा उस खोज से प्राप्त आविष्कार जो मानव-कल्याण के लिए होता है–सभ्यता है। सुई-धागे को खोजने की प्रेरणा (कपड़ों को सिलकर पहनने की इच्छा) संस्कृति है तथा सुई-धागे का आविष्कार सभ्यता है।

प्रश्न 11 : प्रस्तुत पाठ में किन शब्दों की व्याख्या की गई है?

उत्तर : प्रस्तुत पाठ में निबंधकार द्वारा 'संस्कृति' और 'सभ्यता' नामक दो शब्दों की व्याख्या की गई है।

प्रश्न 12 : संस्कृत व्यक्ति कौन है?

उत्तर : एक संस्कृत व्यक्ति किसी नई वस्तु की खोज करता है, किंतु उसकी संतान को वह अपने पूर्वज से अनायास ही प्राप्त हो जाती है। जिस व्यक्ति की बुद्धि अथवा विवेक ने किसी भी नए तथ्य को खोजा था, वह व्यक्ति ही वास्तविक संस्कृत व्यक्ति है और उसकी संतान, जिसे अपने पूर्वज से वह वस्तु अनायास ही प्राप्त हो गई थी, अपने पूर्वज की भाँति सभ्य भले ही बन जाए, संस्कृत नहीं हो सकती।

प्रश्न 13 : संस्कृत व्यक्ति की पहचान हेतु लेखक ने कौन-सा उदाहरण दिया है?

उत्तर : संस्कृत व्यक्ति की पहचान हेतु लेखक ने एक आधुनिक उदाहरण दिया है–न्यूटन ने गुरुत्वाकर्षण के सिद्धांत का आविष्कार किया, इसलिए वह संस्कृत मानव था। आज के युग का भौतिक विज्ञान विद्यार्थी न्यूटन के गुरुत्वाकर्षण से तो परिचित है ही; लेकिन उसके साथ उसे और भी अनेक बातों का ज्ञान प्राप्त है, जिनसे शायद न्यूटन अपरिचित ही रहा। ऐसा होने पर भी हम आज के भौतिक विज्ञान के विद्यार्थी को न्यूटन की अपेक्षा अधिक सभ्य भले ही कह सकें; पर न्यूटन जितना संस्कृत नहीं कह सकते; क्योंकि आज का विद्यार्थी गुरुत्वाकर्षण के ज्ञान का आविष्कर्त्ता नहीं है और न ही वह अतिरिक्त ज्ञान का आविष्कर्त्ता है, जो न्यूटन को नहीं था और उसे है।

प्रश्न 14 : सुई-धागे के आविष्कार का क्या कारण था?
***अथवा* किन आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए सुई-धागे का आविष्कार हुआ? स्पष्ट कीजिए।**
***अथवा* आपके विचार से सुई-धागे का आविष्कार क्यों हुआ होगा?**

उत्तर : मानव ने सुई-धागे का आविष्कार अपने शरीर को ढकने की मूलभूत आवश्यकता के कारण किया होगा। शीत और गरमी से बचने के लिए मानव को कपड़ों की आवश्यकता अनुभव हुई या शरीर सजाने के लिए उसे कपड़ा सिलने की आवश्यकता अनुभव हुई, जिनके परिणामस्वरूप सुई-धागे का आविष्कार हुआ।

प्रश्न 15 : 'संस्कृति' निबंध में निबंधकार ने किन विचारों को प्रस्तुत किया है?

उत्तर : भदंत आनंद कौसल्यायन द्वारा रचित 'संस्कृति' निबंध हमें सभ्यता और संस्कृति से जुड़े अनेक जटिल प्रश्नों को सुलझाने की प्रेरणा देता है। इस निबंध में कौसल्यायन जी ने अनेक उदाहरण देकर यह स्पष्ट करने का प्रयास किया है कि सभ्यता और संस्कृति किसे कहते हैं और ये दोनों एक ही हैं अथवा अलग-अलग। वे सभ्यता को संस्कृति का परिणाम मानते हुए कहते हैं कि मानव संस्कृति अविभाज्य वस्तु है। उन्हें संस्कृति का बँटवारा करने वाले लोगों पर बड़ा आश्चर्य होता है और दुःख भी। उनकी दृष्टि में जो मनुष्य के लिए कल्याणकारी नहीं है, वह न सभ्यता है और न संस्कृति।

प्रश्न 16 : भारत में संस्कृति का कितने तरह का बँटवारा मौजूद है?

उत्तर : भारत में संस्कृति का भाँति-भाँति से बँटवारा किया गया है; जैसे–हिंदू संस्कृति, मुस्लिम संस्कृति, प्राचीन संस्कृति, नवीन संस्कृति आदि।

प्रश्न 17 : 'मानव-संस्कृति' एक अविभाज्य वस्तु है।' इस कथन को संक्षेप में समझाइए।

उत्तर : 'मानव-संस्कृति' एक अविभाज्य वस्तु है, क्योंकि उसमें मानव का कल्याण अथवा हित संपृक्त है। इस कल्याण अथवा हित को उससे अलग नहीं किया जा सकता। उसके अलग करते ही संस्कृति का अस्तित्व समाप्त हो जाएगा। इसलिए कथन सत्य ही है कि मानव-संस्कृति एक अविभाज्य वस्तु है।

प्रश्न 18 : 'संस्कृति' पाठ के अनुसार आदमी के पहले आविष्कार क्या थे तथा मानव के लिए उनकी क्या उपयोगिता थी?

उत्तर : 'संस्कृति' पाठ के अनुसार आदमी के पहले आविष्कार आग और सुई-धागा थे। उस समय मानव के लिए इन आविष्कारों की अत्यधिक उपयोगिता थी। इन्हीं आविष्कारों के द्वारा मनुष्य ने भौतिक सुख-समृद्धि तथा विकास की ओर अपने कदम बढ़ाए। आग ने उसे पके हुए भोजन का स्वाद दिया तो सुई-धागे ने वस्त्रों के निर्माण के माध्यम से उसके शरीर को प्रतिकूल कारकों से बचाने में सहायता की। धीरे-धीरे इन्हीं आविष्कारों से प्रेरणा पाकर उसने अपने जीवन को और भी सुगम तथा सुखमय बनाने वाले आविष्कार किए।

प्रश्न 19 : 'संस्कृति' पाठ के आधार पर लिखिए कि मानव संस्कृति के वास्तविक जन्मदाता कौन हैं? उदाहरणसहित स्पष्ट कीजिए।
***अथवा* 'संस्कृति' पाठ में लेखक ने मानव संस्कृति के जन्मदाता किन्हें कहा है?**

उत्तर : 'संस्कृति' पाठ के आधार पर मानव संस्कृति के वास्तविक जन्मदाता भौतिक प्रेरणा, ज्ञानेप्सा तथा सर्वस्व त्याग की भावना है। आग और

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

सुई-धागे के आविष्कार की प्रेरणा भौतिक है, चाँद-तारों के रहस्यों को जानना ज्ञानेप्सा तथा कल्याण की भावना के वशीभूत होकर लेनिन, कार्ल मार्क्स, सिद्धार्थ आदि के समान दूसरों के कल्याण के कार्य करना ही त्याग है।

प्रश्न 20 : 'संस्कृति' पाठ में संस्कृति-असंस्कृति में क्या अंतर बताया गया है? उदाहरण देकर स्पष्ट कीजिए। *(CBSE 2019)*

उत्तर : 'संस्कृति' पाठ में बताया गया है कि मानव के कल्याण की दृष्टि से जो योग्यता नए आविष्कार, ज्ञानार्जन और सर्वस्व त्याग कराती है, वह संस्कृति है, किंतु इसके विपरीत जो योग्यता आत्म-विनाश के साधनों का आविष्कार कराती है, वह असंस्कृति है। उदाहरणार्थ–आग, सुई-धागे जैसे कल्याणकारी आविष्कार की प्रवृत्ति संस्कृति है, जबकि इसी आग के द्वारा किसी का घर जलाकर उसे कष्ट देने अथवा मारने की प्रवृत्ति असंस्कृति है।

प्रश्न 21 : संस्कृति और सभ्यता क्या है? एक सभ्य तथा संस्कृत व्यक्ति में क्या अंतर है? पाठ के आधार पर उत्तर दीजिए।

उत्तर : मानव की जो योग्यता आग और सुई-धागे का आविष्कार, तारों की जानकारी तथा किसी महामानव से सर्वस्व (अपना सबकुछ) त्याग कराती है, वह संस्कृति है और इस संस्कृति का जो परिणाम है, वह सभ्यता है। आग और सुई-धागे का आविष्कार संस्कृति है और इनके द्वारा हमारे खाने-पीने, ओढ़ने-पहनने, यातायात के साधन और लड़ने-झगड़ने के तरीके विकसित हुए, वह सब हमारी सभ्यता है। अपनी बुद्धि अथवा विवेक से किसी नई चीज़ को गढ़ने अथवा नए तथ्य का दर्शन करने वाला व्यक्ति संस्कृत कहलाता है और अपने पूर्वजों से उन वस्तुओं तथा तथ्यों को अनायास ही प्राप्त करने वाला व्यक्ति सभ्य कहलाता है।

प्रश्न 22 : 'संस्कृति' पाठ के आधार पर 'जन-कल्याण' के क्या-क्या कार्य हो सकते हैं? स्पष्ट कीजए।

उत्तर : 'संस्कृति' पाठ के आधार पर दूसरों को भोजन कराने, समाज के निम्न एवं शोषितवर्ग के उत्थान के लिए प्रयास करने, संपूर्ण मानव-जाति के हितों की रक्षा करने व उसके सुख के लिए प्रयत्न करने, जीवमात्र के प्रति करुणा का भाव रखने और सभी में मैत्री भाव विकसित करने के कार्य जन-कल्याण हेतु किए जा सकते हैं।

प्रश्न 23 : संसार में ज्ञान का प्रथम आविष्कारक किसे कहा जा सकता है और क्यों? 'संस्कृति' पाठ के आधार पर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर : 'संस्कृति' पाठ के आधार पर संसार में ज्ञान का प्रथम आविष्कारक उसे कहा जा सकता है, जिसने किसी तथ्य अथवा वस्तु की खोज अपने अंदर की सहज प्रवृत्ति के कारण की हो। उसके इन कार्यों के पीछे कोई भौतिक प्रलोभन, स्वार्थ तथा अकल्याणकारी भावना नहीं होती, इसलिए उसे ज्ञान का प्रथम आविष्कारक कहा जा सकता है; जैसे–पेट भरा हुआ और अपने तन पर वस्त्र धारण किया हुआ वह व्यक्ति जो तारों भरे आकाश के नीचे इस चिंता में न सो पाया हो कि आखिर यह मोती भरा थाल है क्या? ऐसा व्यक्ति ही आज के ज्ञान का प्रथम आविष्कारक है।

प्रश्न 24 : 'संस्कृति' निबंध में मानव की ज्ञान पाने की इच्छा और भौतिक प्रेरणा को किन उदाहरणों द्वारा स्पष्ट किया गया है?

उत्तर : 'संस्कृति' निबंध में मानव की ज्ञान पाने की इच्छा उसकी उस प्रवृत्ति को माना है, जिसके परिणामस्वरूप वह निठल्ला नहीं बैठ सकता। इसके लिए लेखक ने रात में तारों को देखकर न सो सकने वाले मनीषी का उदाहरण दिया है, जो इस चिंता में है कि आखिर यह मोतियों से भरा थाल है क्या? इसी प्रकार भौतिक प्रेरणा को स्पष्ट करने के लिए लेखक ने आग और सुई-धागे के आविष्कार का उदाहरण प्रस्तुत किया है।

प्रश्न 25 : 'संस्कृति' पाठ के लेखक ने किन उदाहरणों के आधार पर 'संस्कृति' और 'सभ्यता' के स्वरूप को स्पष्ट किया है? किन्हीं तीन का उल्लेख कीजिए।

उत्तर : 'संस्कृति' पाठ में सभ्यता को संस्कृति का परिणाम बताया गया है, पाठ में संस्कृति और सभ्यता के स्वरूप को स्पष्ट करने के लिए दिए गए तीन उदाहरण निम्नलिखित हैं–

(i) **आग का आविष्कार**–वह योग्यता, प्रवृत्ति अथवा प्रेरणा संस्कृति है, जिसके कारण आग का आविष्कार हुआ है और संस्कृति द्वारा आविष्कृत वस्तु सभ्यता है।

(ii) **सुई-धागे का आविष्कार**–वह योग्तया, प्रवृत्ति अथवा प्रेरणा व्यक्ति विशेष की संस्कृति है, जिसके बल पर सुई-धागे का आविष्कार हुआ और यह संस्कृतिजन्य आविष्कृत वस्तु सभ्यता का उदाहरण है।

(iii) **सिद्धार्थ का गृह-त्याग**–सिद्धार्थ अर्थात् गौतम बुद्ध के द्वारा तृष्णा के वशीभूत लड़ती-कटती मानवता को सुख पहुँचाने के लिए किए गए गृह-त्याग की योग्यता अथवा प्रेरणा को संस्कृति तथा इस संस्कृति के परिणामस्वरूप उनके द्वारा बताए गए मार्गों पर चलना सभ्यता है।

प्रश्न 26 : मानव संस्कृति के संदर्भ में आचरण का क्या महत्त्व है? 'संस्कृति' पाठ के आधार पर उत्तर दीजिए।

उत्तर : मानव संस्कृति के संदर्भ में आचरण का विशेष महत्त्व है, क्योंकि इसी के आधार पर यह तय होता है कि अमुक व्यक्ति कितना संस्कृत है। यदि व्यक्ति में मानवीय गुणों का समावेश है और वह मानव कल्याण को ध्यान में रखते हुए तथ्यों की खोज करता है तो वह संस्कृत है इसके विपरीत यदि वह अपनी बुद्धि के सहारे मानव के विरुद्ध विनाशक साधनों का आविष्कार करता है तो वह असंस्कृत कहलाता है।

प्रश्न 27 : लेखक भदंत आनंद कौसल्यायन के अनुसार सिद्धार्थ ने अपना गृह-त्याग किस अपेक्षा से किया था? 'संस्कृति' पाठ के आधार पर लिखिए।

उत्तर : लेखक भदंत आनंद कौसल्यायन के अनुसार तृष्णा के वशीभूत लड़ती-कटती मानवता को सुख देने की अपेक्षा से ही आज से ढाई हज़ार वर्ष पूर्व सिद्धार्थ ने गृह-त्याग किया था। मानवता का उत्थान करना ही उनका परम लक्ष्य था।

प्रश्न 28 : लेखक ने आग और सुई-धागे के आविष्कारों से क्या स्पष्ट किया है? 'संस्कृति' पाठ के आधार पर उत्तर दीजिए। *(CBSE 2015)*

उत्तर : 'संस्कृति' पाठ के लेखक ने 'आग' और 'सुई-धागे' के आविष्कारों के माध्यम से सभ्यता और संस्कृति की अवधारणा को स्पष्ट करने का प्रयास किया है। लेखक के अनुसार आग अथवा सुई-धागे का आविष्कार करने वाली योग्यता, प्रवृत्ति अथवा प्रेरणा उस व्यक्ति विशेष की संस्कृति है और उस संस्कृति द्वारा आविष्कृत वस्तु उसकी सभ्यता है। इस प्रकार लेखक ने सभ्यता को संस्कृति का परिणाम माना है।

प्रश्न 29 : कार्ल मार्क्स ने क्या स्वप्न देखा था और उसका जीवन किस प्रकार बीता? *(CBSE 2016)*

उत्तर : कार्ल मार्क्स ने संसार के सारे मज़दूरों को सुखी देखने का स्वप्न देखा था। इसी स्वप्न को पूरा करने के लिए उसने अपना सारा जीवन दुःख में बिता दिया।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

प्रश्न 30 : रात के तारों को देखकर न सोने वाले मनीषी को प्रथम पुरस्कर्त्ता क्यों कहा गया है? 'संस्कृति' पाठ के आधार पर उत्तर दीजिए। *(CBSE 2016)*

उत्तर : 'संस्कृति' पाठ के अनुसार पेट भरा और तन ढँका आदमी खुले आकाश के नीचे लेटा हुआ सारी रात इसलिए नहीं सो पाता; क्योंकि वह यह जानने के लिए परेशान है कि आखिर यह मोती भरा थाल है क्या?

लेखक ने रात के तारों को देखकर न सो सकने वाले उस मनीषी को प्रथम पुरस्कर्त्ता माना है, क्योंकि उसी की खोज के बाद आज आकाश के ग्रह-तारों के बारे में बहुत-सी जानकारियाँ प्राप्त हो सकी हैं।

प्रश्न 31 : 'संस्कृति' पाठ के लेखक के अनुसार सभ्यता क्या है? *(CBSE 2016)*

उत्तर : 'संस्कृति' पाठ के लेखक के अनुसार सभ्यता संस्कृति का परिणाम है। सभ्यता के अंतर्गत हमारे खाने-पीने, ओढ़ने-पहनने के तरीके आवागमन के साधन, हमारे लड़ने-झगड़ने के तरीके आदि आते हैं। किंतु उन साधनों को सभ्यता के अन्तर्गत नहीं रखा जा सकता जिनके द्वारा मानव का अहित और विनाश होता है।

अभ्यास प्रश्न

निर्देश–*निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के सही उत्तर विकल्प चुनकर लिखिए–*

आग के आविष्कार में कदाचित पेट की ज्वाला की प्रेरणा एक कारण रही। सुई-धागे के आविष्कार में शायद शीतोष्ण से बचने तथा शरीर को सजाने की प्रवृत्ति का विशेष हाथ रहा। अब कल्पना कीजिए उस आदमी की जिसका पेट भरा है, जिसका तन ढँका है, लेकिन जब वह खुले आकाश के नीचे सोया हुआ रात के जगमगाते तारों को देखता है, तो उसको केवल इसलिए नींद नहीं आती क्योंकि वह यह जानने के लिए परेशान है कि आखिर यह मोती भरा थाल क्या है? पेट भरने और तन ढँकने की इच्छा मनुष्य की संस्कृति की जननी नहीं है। पेट भरा और तन ढँका होने पर भी ऐसा मानव जो वास्तव में संस्कृत है, निठल्ला नहीं बैठ सकता। हमारी सभ्यता का एक बड़ा अंश हमें ऐसे संस्कृत आदमियों से ही मिला है, जिनकी चेतना पर स्थूल भौतिक कारणों का प्रभाव प्रधान रहा है, किंतु उसका कुछ हिस्सा हमें मनीषियों से भी मिला है जिन्होंने तथ्य-विशेष को किसी भौतिक प्रेरणा के वशीभूत होकर नहीं, बल्कि उनके अपने अंदर की सहज संस्कृति के ही कारण प्राप्त किया है। रात के तारों को देखकर न सो सकने वाला मनीषी हमारे आज के ज्ञान का ऐसा ही प्रथम पुरस्कर्त्ता था।

1. **आग के आविष्कार का कारण रहा है–**
   (क) पेट की ज्वाला (ख) जिज्ञासा
   (ग) आत्मरक्षा (घ) गरमी से बचाव।
2. **सुई-धागे के आविष्कार का कारण है–**
   (क) सरदी से बचने की प्रवृत्ति
   (ख) गरमी से बचने की प्रवृत्ति
   (ग) शरीर को सजाने की प्रवृत्ति
   (घ) उपर्युक्त सभी।
3. **मोती भरा थाल किसे कहा है–**
   (क) सूर्य युक्त आकाश को (ख) तारों से भरे आकाश को
   (ग) बादलों से घिरे आकाश को (घ) लड़ियों से सजे मंडप को।
4. **कौन निठल्ला नहीं बैठ सकता–**
   (क) संस्कृत व्यक्ति (ख) सभ्य व्यक्ति
   (ग) किसान (घ) मजदूर।
5. **संस्कृति की जननी है–**
   (क) तन ढँकने की इच्छा (ख) पेट भरने की इच्छा
   (ग) जिज्ञासा और कर्मशीलता (घ) इनमें से कोई नहीं।

निर्देश–*निम्नलिखित प्रश्नों के सही उत्तर विकल्प चुनकर लिखिए–*

6. **भदंत आनंद कौसल्यायन का जन्म कब हुआ–**
   (क) सन् 1905 में (ख) सन् 1906 में
   (ग) सन् 1910 में (घ) सन् 1908 में।
7. **रूस का भाग्य विधाता किसे कहा गया है–**
   (क) लेनिन को (ख) काल मार्क्स को
   (ग) अरस्तू को (घ) अब्राहम लिंकन को।
8. **गौतम बुद्ध ने अपना घर क्यों त्याग दिया था–**
   (क) मानवता के सुख के लिए
   (ख) बौद्ध धर्म की स्थापना के लिए
   (ग) प्रतिष्ठा पाने के लिए
   (घ) उपर्युक्त में से कोई नहीं।

निर्देश–*निम्नलिखित प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर लिखिए–*

9. **लेखक की दृष्टि में 'सभ्यता' और 'संस्कृति' की सही समझ अब तक क्यों नहीं बन पाई है?**
10. **आशय स्पष्ट कीजिए–**
    मानव की जो योग्यता उससे आत्म-विनाश के साधनों का आविष्कार कराती है, हम उसे उसकी संस्कृति कहें या असंस्कृति?
11. **संसार में ज्ञान का प्रथम आविष्कारक किसे कहा जा सकता है और क्यों? 'संस्कृति' पाठ के आधार पर स्पष्ट कीजिए।**
12. **लेखक ने आग और सुई-धागे के आविष्कारों से क्या स्पष्ट किया है? 'संस्कृति' पाठ के आधार पर उत्तर दीजिए।**

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in